

ग्रन्थावलोकन

इतिहासना अज्ञात प्रदेशमां स्वैरविहार ‘निर्ग्रन्थ ऐतिहासिक लेख समुच्चय’

मुनि भूबनचंद्र

इतिहास आलेखननी आधुनिक पद्धति भले अंग्रेज / जर्मन विद्वानो थकी आविष्कार पामी होय, पण हवे ते विश्वभरमां मान्य पद्धति बनी चूकी छे. आजनो इतिहासकार मात्र चरित्रो, कथाग्रंथो के रासोना आधारे इतिहास लेखतो नथी. प्रमाणभूत इतिहास माटे आंतरिक अने बाह्य प्रमाणोनी आवश्यकता आजे सुस्थापित थई चूकी छे; तुलना अने पृथकरण-विश्लेषण पण जरूरी छे. प्रमाणोने स्रोत मात्र साहित्यमां-लिखित रूपमां ज सीमित नथी होतो. लिखित उपरंत शिलालेखो, ताम्रपत्रो, प्रतिमालेखो, सिक्काओ, पुरातात्त्विक निष्कर्षो, वैज्ञानिक परीक्षणो- आ बधुं पण इतिहासकारे तपासवुं पडे. लिखित सामग्रीमां पण केटलुं वैविध्य होय छे ! मात्र इतिहासग्रंथो ज नहि, हस्तप्रतोनी प्रशस्तिओ, पुष्पिकाओ, प्रवासवर्णनो, लोकगीतो, दस्तावेजो, दंतकथाओ वगैरेमां पण इतिहासना अंशो विखरायेला पड्या होय छे. आवा विभिन्न स्रोतोमां इतिहासकारे नजर दोडावबो पडे छे, भूगोल-खगोल के तत्त्वज्ञान-फिलोसोफी जेवा विषयोनो पण परिचय इतिहासकारे राखबो पडे. क्यारेक सैद्धांतिक उल्लेखोना आधारे कोई व्यक्ति के घटनानो समयनिर्णय थयो होय एवा दाखला छे. इतिहासकारनी पासे भाषा, व्याकरण अने साहित्यनी विविध शाखाओनुं पण उच्च कक्षानुं ज्ञान होवु ‘जोईए. आ बधाथी उपर, प्रबल्ल स्मरणशक्ति तथा फलदूष कल्पनाशक्ति पण होवा जोईए. दरेक क्षेत्रमां आजे तो विश्वभरमां संशोधको शोधकार्य करता ज रहेता होय छे. इतिहासविद जो आ बधाथी माहितगार न होय तो तेनुं शोधकार्य नबळुं ज रही जाय. प्रमाणभूत इतिहासना संशोधन माटे आवी ने आटली सज्जता अपेक्षित होय त्यारे उच्च कक्षाना इतिहास संशोधको के लेखको ओछा होय ए देखीतुं छे.

जैन इतिहासनी वात करोए तो आधुनिक पद्धतिए इतिहासनुं आलेखन

सोएक वर्षथी शरु थयुं छे. मोटा गजाना इतिहास-संशोधकोए इतिहासना घणा बधा कोयडा उकेल्या छे, इतिहासनी पुष्कल सामग्री एकत्र करी छे. आम छतां, इतिहासमां उमेरवा जेवुं हजी घणुं बाकी रहे छे. पुण्यविजयजी, जिनविजयजी, नाथूराम प्रेमी, मोहनलाल द. देसाई, पूनरचंद नाहर, अगरचंदजी नाहर, जयंतविजयजी, विजयेन्द्रसूरि, पं. सुखलालजी, पं. बेचरदासजी, दरबारीलाल कोठिया जेवा पुरोगामीओए ऐतिहासिक तथ्यो एकत्र करवानुं अने इतिहासना अंकोडा मेलववानुं कार्य कर्युं छे, छतां तेमना समय पछी बहार आवेली नवी सामग्रीना आधारे इतिहासना परिष्कार-परिमार्जननुं कार्य तो ऊभुं ज छे.

इतिहासना कंटाळाजनक अने पडकाररूप क्षेत्रे प्रवृत्त होय एवा थोडा सारा संशोधको सद्भाग्ये आजे पण छे. प्रा. मधुसूदन ढांकी आवा एक समर्थ-सुसज्ज-संनिष्ठ, तीक्ष्ण दृष्टि धरावता, बहुमुखी प्रतिभावाला इतिहासविद छे. एमनुं कार्यक्षेत्र व्यापक छे. आनंदनी वात ए छे के जैन इतिहासना संशोधनने एमणे पोताना कार्यक्षेत्रमां समाव्युं छे. जैन इतिहास विषयक तेमना लेखोनो संग्रह ‘निर्ग्रन्थ ऐतिहासिक लेख समुच्चय’ एवा नामे बे भागमां हमणां ज बहार पड्यो छे. आ लोखोनुं परिशीलन करतां कोईने पण लागशे के श्री ढांकीना रूपमां एक समर्थ, जवाबदार इतिहासकार आपणने सांपड्या छे. १९६६ थी शरू करी अत्यार सुधीमां लखायेला ५६ जेटला लेखो - निबंधो आ ग्रन्थमां प्रकाशित थया छे. इतिहास संबंधित सामग्रीथी आ ग्रन्थ उसोठस भरेलो छे. विषयवैविध्य, रजुआतनी शैली, शुद्ध ऐतिहासिक दृष्टिकोण अने लेखकनी सज्जता - आ बधुं अहीं नेत्रदीपक बनी आपणी सामे आवे छे. उपर जेनी चर्चा करी छे ते कार्य अर्थात् बहार आवेली ने आवती रहेती नवी सामग्रीना आधारे इतिहासनुं परिमार्जनकार्य आजे पण चालु छे एवो संतोष श्री ढांकीना आ बे ग्रन्थ जोईने जरूर थाय.

इतिहासनी शोधमां नानी नानी विगतो केवो मोटो भाग भजवे छे अने एवी विगतोनो समन्वय करवामां केवा कौशल्यनी जरूर पडे छे, ए वात आ संग्रहमानो एक-एक लेख जोतां वाचकने सारी रीते समजाशे. लेखो एटला तो सुग्रथित रूपे लखाया छे के संशोधनात्मक इतिहासलेखनना आदर्श।

नमूना तरीके काम आवी शके. 'जीर्णदुर्ग - जूनागढ विशेश' (खंड-१, पृ. १९०), 'स्वामी समन्तभद्रनो समय' (खंड-१, पृ. २८), वादी कवि बप्पभट्टसूरि' (खंड-१, पृ. ५९), 'सिद्धराजकारित जिनमन्दिरो' (खंड-२, पृ. १२२) आदि लेखो इतिहासना विद्यार्थी माटे पाठ्यपुस्तकनी गरज सारे एवा सुबद्ध, समृद्ध लेखो छे. शक्य एटली बधी ज विगतो एकत्र करवी, तेना पर तुलनात्मक विचार चलाववो, नवां प्रमाणो द्वारा तेनु खंडन के मंडन करवुं, शक्य विरोधो स्वयं प्रस्तुत करी तेनु निराकरण पण पूर्ण पाडवुं - आ बधुं विस्तृत अने विगतप्रचुर शैलीओ थयेलुं आ लेखोमां जोवा मळशे.

'नामूलं लिख्यते किञ्चित्' - 'आधार विनानुं कंई पण न लखवुं' - ए शास्त्रीय नियमने श्री ढांकी कठोरपणे अनुसरे छे अने आधारो - प्रमाणो शोधवानो जे श्रम करे छे ते विरल कक्षानो छे. आमां एमनी बहुश्रुतता, प्रखर स्मृति शक्ति अने विषय परत्वेनी निष्ठा जणाई आवे छे. लेखो तो माहिती सभर छे ज, लेखांते जोडेलां टिप्पणो पण विस्तृत छे - क्यांक क्यांक तो ५-१० पानां सुधी लंबाय छे. मीनळदेवीनुं खरुं नाम मैळलदेवी हतुं ए विधानना टेकामां छेक कर्णाटकना अभिलेखोनो आधार लेखक रजू करे छे (खंड-१, पृ. १३५); 'वालीनाह' व्यन्तसा मूळ नाम विशेश दन्तकथा, साहित्य, लोकरूढि, शिल्पशास्त्र जेवा विभिन्न स्रोतोमांथी आधारभूत सामग्री आपे छे. लेखकनी शोध केटली व्यापक छे तेनां आवां दृष्टान्तो ग्रन्थमां ठेर ठेर जोवा मळे छे.

इतिहासकारो पण मानवो होय छे, मानवसहज प्रमाद, पूर्वग्रह के असूयाना प्रभाव हेठल क्यारेक लेखकना हाथे इतिहासने अन्याय थई जतो होय छे. पोताना समकालीनोनी के पुरेगामीओनी आवी क्षतिओ शोधवानी-सुधारवानी कडबी फरज पण इतिहास-लेखके क्यारेक बजाववानी थाय छे. श्री ढांकीने पण आवुं करवुं पड्युं छे. 'सिद्धराजकारित जिनमन्दिरो' (खंड-२, पृ. १२२) लेखमां आवुं थयुं छे. पुरेगामी विद्वाननां विधानोनो सचोट प्रतिकार करवामां लेखके जरा पण कसर छोडी नथी, ते साथे ए विद्वानना प्रदान अने अन्य विशेषताओनो मानभेर उल्लेख करवानुं लेखक चूकता नथी. 'स्वामी समन्तभद्रनो समय' (खंड-१, पृ. २८) लेखमां पूर्वग्रहग्रस्त विद्वानोना

तर्कोनां छोतरां उखाडती श्री ढांकीनी दलीलो कटाक्ष-आदर-पड़कारना मिश्रणथी रोचक बनी छे, पण रुचिभंग नथी करती. तारंगाना अहंत् अजितनाथ प्रासादना कर्ता विशे बे समकालीन विद्वानोनी आलोचना करतो लेख (खंड-२, पृ. १६९) इतिहासकारना उत्तरदायित्वनी छबी प्रस्तुत करे छे. इतिहासमां अटकल पर आधार न ज राखी शकाय, नकर तंथ्यो ज सर्वोपरि बनी रहेवां जोईए ए मुद्दो आ लेखमां सारो तरी आवे छे.

श्री ढांकी शिल्प-स्थापत्य-पुरातत्त्वना विशेषज्ञ छे तेथी जिनमन्दिरे अने शिल्पोना संशोधनमां तेमनी दृष्टि विशेष काम करे छे. ग्रंथनो बीजो खंड शिल्प-स्थापत्य-मंदिर विषयक लेखोथी भरचक छे. द्वितीय खंडना अंते चित्रविभागमां मोटी संख्यामां शिल्प-मूर्ति आदिनी छबीओ अपाई छे, जे नजराणां समान छे.

‘गौतमस्वामी स्तव’ना कर्ता वज्रस्वामी विशे लेखमां, प्रशस्ति-लेखना वाचनमां एक आंकडो छूटी गयानी कल्पना अने तेना समर्थनमां आधारे आप्या छे ते तेमना जेवा आ क्षेत्रना सुदीर्घ अनुभवीने ज सूझे एवी बात छे. ‘चिकुर द्वात्रिंशिका’ना कर्ता कुमुदचन्द्र दिगंबर विद्वान छे अने ‘कल्याणमन्दिर’ना कर्ता पण ए ज छे, सिद्धसेन दिवाकर नहि, आना समर्थनमां सुन्दर तर्कश्रेणि लेखके आपी छे. ‘प्रभावकचरित’ (खंड-२, पृ. ९५)नी एक खूटती कडी लेखके आबाद शोधी काढी छे. कल्याणत्रय (खंड-१, पृ. २२६) प्रकारनी शिल्परचना उपर आ ग्रन्थमां पहेलीवार प्रकाश पाडे छे.

मुद्रण, कागळ अने सजावटथी सुंदर तथा चित्रविभागथी समृद्ध एवा आ ग्रन्थमां प्रूफवाचननी क्षतिओ जो के रही छे. संस्कृत-प्राकृत सामग्रीमां आवी अशुद्धिओ वधारे प्रमाणमां छे जे आ कक्षाना-ग्रन्थमां बाधारूप बनी शके छे, ०पण्णरस-चास (खंड-१, पृ. १४)-अहीं चास ने स्थाने ‘वास’ साचो शब्द छे. दलसंचनियं (खंड-१, पृ. २४), ‘तेओ’ (खंड-१, पृ. ३३), ‘किं भणियो जाणडज्जं’ (खंड-१, पृ. ६७) जेवी अशुद्धिओ अन्य पण घणी छे. खंड-१, पृ. २६० पर आपेला ‘रैवतगिरिस्तोत्र’मां आवी भूलो सारा प्रमाणमां रही छे, तेमांनी केटली प्रूफवाचननी अने केटली हस्तप्रतवाचननी हशे, ते तो

लेखक ज कही शके. 'वीतरागस्तुति'नो छंद भुजंगप्रयात जणाव्यो छे (खंड-१, पृ.२५५) पण ते वसन्ततिलका छे. क्यांक गेरमार्गे दोरे एकी भूलो पण छे : प्रथम खंडना प्रथम लेखना टिप्पण क्रमांक-२मां 'आचारांग-प्रथम स्कंध : ईस्वी ४३०-३००' एम छपायुं छे; अही 'ई.स.पूर्वे' एम होवुं जोईतु हतु. बंने खंडोमांना लेखोने अनुक्रममां क्रमांक अपाया छे पण ग्रन्थमां लेखनां शीर्षको साथे क्रमांक अपाया नथी. आ एक अगवडरूप बने एकी क्षति छे.

ब्यक्तिनामो, स्थळनामो अने ग्रन्थनामोनी अकारादि सूचि बंने भागमां ग्रन्थान्ते आपी छे. ऐतिहासिक संशोधनना कार्यमां आ सूचिओ विद्वानोने सहायक नीवडशे. लेखोना अंते टिप्पणोमां लेखकना विशाळ अवगाहननी साक्षी पूरती ढगलाबंध आनुषंगिक माहिती संगृहीत छे. इतिहासना विद्यार्थीओने आमांथी माहिती अने दृष्टि - बंने मळे अम छे. टिप्पणोनां विशेषनामोनी पण अकारादि सूचि होय तो खूब उपयोगी बने, पण ए कदाच शक्य नथी बन्यु. बंने खंडमां श्री हरिप्रसाद गं. शास्त्रीना अवलोकनलेखो छे. प्रा. बंसीधर भट्ठनो आमुख प्रथम खंडने प्राप्त थयो छे.

ग्रंथना वांचनमांथी पसार थतां जे थोडुंक नजरमां आव्युं ते पूर्तिरूपे नोंधवानी लालच रोकी शकतो नथी. खंड-१, पृ. १६, टि.२मां 'नोकार' परथी 'नोकारसी' शब्द उतरी आव्यानुं जणाव्युं छे पण अे शब्द 'नमुक्कारसहियं' नोकारसहियं=नोकारसी अम उतरी आव्यो होय अेवो संभव छे. 'नमुक्कारसहियं' शब्द परचख्खाणमां आवे छे.

खंड-२, पृ. ६३, लेख क्र.२मां लुणाग० छे ते लूणीग होवानो प्रेरपूरो संभव छे. 'णी' णा जेको वंचाय अेवुं जूनी लिपिमां बनतुं होय छे.

खंड-२, पृ.८३, प्रकृता समर्पिता च- आ श्लोकमां समर्पिता नही पण समर्थिता मूळ प्रतिमां हशे. समर्थिता अेटले पूरी करी. सम् + अर्थ धातु समाप्तिना अर्थमां प्रयोजातो हतो. लिपिनी विचित्रताने कारणे र्थि अने र्पि वच्चे गुंचवाडो हस्तप्रतवांचनमां थतो होय छे.

खंड-२, पृ. २००, टि. पांचमां लेखके 'निज दैता'नो अर्थ शुं

करवो अेवो प्रश्न कर्यो छे. 'दयिता' शब्द ज भ्रष्ट रूपमां अहीं 'दैता' थयो छे. ललितादेवी वस्तुपालनां पली हतां, औ सन्दर्भ पण अहीं मार्गदर्शक बने छे.

'निर्ग्रन्थ ऐतिहासिक लेख समुच्चय' ग्रन्थमां श्रीमधुसूदन ढांकीनी विषयनिष्ठा तथा क्षमतानां दर्शन तो थाय ज छे, साथे साथे शुष्क विषयने रसिक बनावती शैली, मानवीय पासाने स्पर्शती दृष्टि, क्यांक गंभीरता तथा क्यांक रमूजना छांटणां धरावतुं तेमनुं गरवुं गुजराती गद्य वाचकना मनमां श्री ढांकीना प्रफुल्ल-प्रखर व्यक्तित्वनी छाप उपसावी जाय छे. प्रस्तुत ग्रन्थ जैन इतिहासना केटलाय बिन्दुओ पर प्रकाश पाथरे छे. ग्रन्थनुं वांचन दूर दूरना इतिहासना अगोचर प्रदेशमां स्वैर विहार करी आव्या जेवी अनुभूति वाचकने करावी जाय छे.

★ निर्ग्रन्थ ऐतिहासिक लेख समुच्चय-खंड १, लेखक : मधुसूदन ढांकी, प्रथम आवृत्ति, २००२, पृ. डेमी आठपेजी ३४८ + २४, मूल्य : रु. ४००.

खंड-२, प्रथम आवृत्ति, २००२, पृ. डेमी आठपेजी ३०४ + २० +८० आर्टप्लेट्स, मूल्य : रु. ५००.

प्रकाशक : श्रेष्ठी कस्तूरभाई लालभाई स्पारक निधि, प्रासिस्थान : शारदाबेन चीमनभाई एज्युकेशन रिसर्च सेन्टर, 'दर्शन', राणकपुर सोसायटी सामे, शाहीबाग, अमदाबाद-३८०००४.

जैन देरासर
नानीखाखर - ३७०४३५
जि. कच्छ, गुजरात

